International Journal of Sanskrit Research 2017; 3(6): 04-05

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2017; 3(6): 04-05
© 2017 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 02-09-2017
Accepted: 03-10-2017

डॉ॰ शैलेन्द्र सिंह
हिसार, हरियाणा, भारत

Correspondence
डॉ॰ शैलेन्द्र सिंह
हिसार, हरियाणा, भारत

पर्यावरण प्रदूषण के परिप्रेक्ष्य में वैदिक समाधान

डॉ॰ शैलेन्द्र सिंह

प्रस्तावना

यूनान, मिश्र, रोम सब मिट गए जहाँ से।
कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी।।

उपरोक्त पक्तियाँ भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति की गौरव गाथा का बखान करती हैं। इसका मूल वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है। पर्यावरण प्रदूषण की समस्या से त्रस्त होकर आज सारा विष्व प्रदूषण को दूर करने तथा पर्यावरण की शुद्धि के वैज्ञानिक उपाय खोज रहा है। इस समस्या की ओर जन–जन का ध्यान आकृष्ट करने के लिए प्रत्येक वर्ष 5 जून विष्व पर्यावरण दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस अवसर पर संयुक्त राष्ट्र संघ तथा उससे जुड़ी संस्थाओं द्वारा प्रत्येक वर्ष अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर पर्यावरण की गोष्ठियाँ आयोजित की जाती है जिनमें विष्व के पर्यावरण की बिगड़ती स्थिति पर चिन्ता व्यक्त की जाती है तथा इसके समाधान की दिषा में प्रतिभागी राष्ट्रों के प्रतिनिधियों द्वारा अपने सुझाव दिये जाते है और रणनीति तय की जाती है।

वैज्ञानिकों ने पर्यावरण की शुद्धि के लिए प्रकृति को मानव की सर्वाधिक सहयोगिनी मानते हुए विषेष रूप से वन एवं वृक्षों के महत्व को स्वीकार किया है। विष्व के प्राचीनतम ग्रन्थ वेद में मन्त्रद्रष्टा ऋषियों ने हजारों वर्ष पूर्व उपर्युक्त तथ्य का दर्षन कर लिया था। वैदिक संहिताओं में पर्यावरण की शुद्धि के लिए वन, वृक्ष एवं वनस्पतियों को उपयोगी मानते हुए उनके महत्त्व का निरूपण किया गया है। इसके अतिरिक्त वेद में यज्ञ को पर्यावरण शुद्धि के लिए सर्वाधिक प्रभावषाली व सर्वोतम साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। इसलिए वैदिक संस्कृति में प्रत्येक शुभावसर पर यज्ञ का विधान है और गृहस्थी के लिए तो यज्ञ को अनिवार्य दैनिक कर्त्तव्य माना गया है। आज के इस प्राकृतिक प्रदूषण युग में वातावरण को प्रतिक्षण

परिषुद्ध करने एवं उसे जीवनदायक बनाने तथा सुखद वर्षा के अनुकूल करने के लिए यज्ञ अपरिहार्य है। ऋग्वेद में कहा गया है कि यज्ञ के द्वारा द्युलोक को प्रसन्न किया जाता है और द्युलोक वर्षा के द्वारा पृथिवी को तृप्त करता है। यज्ञ से मेघ और मेघ से वर्षा होती है।

'भूमिं पर्जन्या जिन्वन्ति, दिवं जिन्वन्त्यग्नयः' (ऋक् 1-164-51)

यजुर्वेद में उत्तम कृषि के लिए यज्ञ को आवष्यक बताया गया है। वेदों में जहाँ विष्व के लिए जीवनयोपयोगी अन्य वस्तुओं का निर्देष किया गया है वहीं वृक्ष, वनस्पति, औषधि, लता एवं वनों का भी सम्मानपूर्वक उल्लेख किया गया है। वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण की दृष्टि से इनका महत्व समझते हुए इन्हें श्रद्धापूर्वक नमस्कार करते हुए कहा है– 'नमो वृक्षेभ्यः (यजु0 16-17) इतना ही नहीं वृक्ष, वन एवं औषधियों का संरक्षण एवं संवर्धन करने वालों को भी 'वनानां पतये नमः' तथा 'ओषधीनां पतये नमः' (यजु0 16.18 एवं 19) कहकर नमस्कार किया गया है।

मन्त्रद्रष्टा ऋषिगण इस तथ्य को भलीभांति जानते थे कि वृक्ष एवं लताएँ आदि जहाँ अपने फल, फूल एवं काष्ठ आदि द्वारा समृद्धि प्रदान करते है वहाँ शुद्ध एवं प्राणदायक वायु द्वारा पर्यावरण को भी माधुर्य गुणयुक्त बनाते हैं। अतः ऋग्वेद में कहा गया है कि वृक्ष प्रदूषण को नष्ट करते है, अतः उन्हें न काटो।

वृक्षों एवं वनस्पतियों के सम्पर्क से वातावरण को प्राणवान एवं मधुमय बना देने वाले वायु को एक मन्त्र में विष्वभेषज कहा गया है और प्रार्थना की गई है कि वह दूषित वायु को दूर करे तथा शुद्ध वायु 'भेषजवात' को प्रवाहित करे – 'अग्निः कृणोतु भेषजम्'(अथर्व0 8-106-3)

वेद में वर्णित इस जीवनदायक भेषजवात के मूलस्त्रोत वन एवं वृक्ष है जिनके महत्व का वेदमन्त्रों में विवरण प्राप्त होता है। पर्यावरण की दृष्टि से वृक्षों के महत्त्व की यह वैदिक मान्यता जैसे बाद के लौकिक संस्कृत साहित्य में भी दृष्टिगत होती है। 'अभिज्ञानषाकुन्तलम्' में वनस्पतियों के प्रति जिस स्नेहिल भावना की अभिव्यक्ति हुई है वह उस समय के पर्यावरण चेतना का सर्वोत्कृष्ट स्वरुप प्रस्तुत करता है। वृक्षों की पुत्र रूप से प्रतिष्ठा तथा इससे भी बढ़कर उनके प्रति कृतज्ञता एवं श्रदा का भाव प्रायः प्रत्येक पुराण में मिलता है। सर्वप्रथम महाभारत में वृक्षों को धर्मपुत्र मानकर इनके संरोपन एवं संवर्धन को अत्यन्त श्रेयस्कर बताया गया है। महाभारत के मोक्षधर्म पर्व में तो वृक्षों को सजीव प्राणी के रूप में वर्णित किया गया है।

वेद में पर्वतों का बहुत महत्त्व वर्णन किया गया है। पर्वत खनिज के बहुमूल्य स्त्रोत है। पर्वत वनादि के द्वारा वातावरण के शोधक भी हैं। पर्वत पृथ्वी का सन्तुलन बनाए हुए हैं। ऋग्वेद में वर्णित है कि पर्वत शुद्ध वायु देकर मृत्यु से रक्षा करते हैं। अतएव पर्वतों में रक्षा की प्रार्थना की गई है।

वैदिक मान्यतानुसार पर्यावरण की शुद्धि का सर्वोतम साधन यज्ञ है। इसलिए यज्ञ को वैदिक संस्कृति का अभिन्न अंग माना गया है। यदि यज्ञ का गूढ़–दार्षनिक अर्थ लें तो यह सृष्टि एवं मानव जीवन ही यज्ञ है और परमात्मा इस सृष्टियाग का सर्वप्रथम होता है।[1] अन्य वेदमन्त्रों एवं विषेष रूप से 'पुरूषसूक्त' में यज्ञ से ही सृष्टि–उत्पति प्रतिपादित है। इसी वैदिकभावना की अनुपालना करते हुए भगवान कृष्ण ने गीता में कहा है कि पहले प्रजापति ने यज्ञ से ही सृष्टि–परम्परा को बढ़ाया, पर रूा ही आपकी कामनाओं को पूर्ण करने वाला हो–

भौतिक दृष्टि से यज्ञ वह अग्निहोत्र है जिसके अन्तर्गत घी एवं सामग्री की आहुतियाँ पवित्र वेदमन्त्रों का उच्चारण करके अग्नि में दी जाती है और अग्नि अपने में डाले गए उक्त द्रव्यों को अत्यधिक शक्तिषाली बनाकर वायु–जल–पृथिवी एवं अत्नरिक्ष में पहुँचा देता है जिससे वातावरण शुद्ध, पवित्र, सुगन्धित, प्राणदायक एवं स्वास्थ्यप्रद हो जाता है। अतः वैदिक सिद्धान्तानुसार अग्निहोत्र ही पर्यावरण की समस्या का सर्वोतम एवं सरलतम समाधान है।

अग्निहोत्र का आधारस्तम्भ अग्नि है। यही अग्नि सूर्य के रूप में प्रकाष एवं उष्णता प्रदान करता है और अपनी तीक्ष्ण किरणों से समस्त दूषित पदार्थो व मल–मुत्रादि को सुखाकर पर्यावरण को स्वच्छ, रागाणुरहित, स्वास्थ्यप्रद एवं जीवनोपयोगी बनाता है । इसलिए वेदमन्त्र में 'इदं हविर्यातुधानान् नदी फैनमिवावहत्'(अथर्व0 7-8-2) कहकर रोगाणुओं को नष्ट करने के विषय में कहा गया है। पर्यावरण के प्रदूषण का कारण यह है कि आज प्रत्येक व्यक्ति किसी ने किसी प्रकार से पर्यावरण को दूषित करता है, किन्तु पर्यावरण की शुद्धि एवं संरक्षण का उपाय की ओर किसी का ध्यान नहीं है। वाहनों से निकलने वाला धुआ एवं कारखानों से निकलने वालाधुआ तथा अपषिष्ट पदार्थ पर्यावरण को दूषित करते हैं। अतः यदि विष्व को आज प्रदूषण के भयंकर विनाष से बचाना है तो प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह अनिवार्य व्यवस्था करनी होगी कि हम प्रतिदिन जितना प्रदूषण फैलाते है उतना ही उसे दूर करने के लिए भी यत्किंचित् प्रयास अवष्य करें। वैदिक ऋषियों की दृष्टि जब हजारों साल पूर्व इस ओर गई थी और उन्होनें पर्यावरण की समस्या के समाधान के लिए प्रतिदिन प्रत्येक गृहस्थ के लिए यज्ञ को दैनिक कृत्य के रूप में अपनाने का विधान किया था। दैनिक यज्ञ के अतिरिक्त वेद में दर्षपौर्णमास एवं ऋतुओं के अनुसार किए जाने वाले यज्ञों का भी विधान है जिससे कि ऋतु परिवर्तनों के अवसर पर होने वाले प्रदूषण एवं रोगों के फैलाव को दूर किया जा सके – 'ऋतवस्ते यज्ञं वितन्वन्तु।

वयं देवा नों यज्ञमृतुथा नयन्तु।।

वैदिक मन्त्रों से ऐसा प्रतीत होता है कि वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण की समस्या के समाधान हेतु गम्भीर चिन्तन किया था और मानव एवं विष्व के कल्याण के लिए पर्यावरण को जीवनोपयोगी बनाने के साधनभूत यज्ञों का एक वैज्ञानिक विधि के रूप में अविष्कार किया था। यज्ञ की इसी महत्ता के कारण मन्त्र में उसे 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' कहकर विष्व के केन्द्र के रूप में महिमामण्डित किया गया है। आज यद्यपि पर्यावरण की शुद्वि के वैज्ञानिक उपाय भी किए जा रहे है, किन्तु एक तो वे उपाय अन्यन्त व्ययसाध्य है और दूसरे वे सर्वजनसुलभ भी नहीं है। अतः पर्यावरण की समस्या के समाधान के लिए यज्ञ ही सर्वोत्तम, सरलतम एवं सर्वजनसुलभ साधन है। इसके अतिरिक्त याजक वेदमन्त्रों में यज्ञ करते समय अन्तरात्मा से विष्व के कल्याण एवं विष्वषान्ति की जो कामना करता है उससे सर्वत्र आनन्द की अमृतधारा बह निकलती है। वेदमन्त्रों का स्वरसहित मधुर गायन ध्वनिप्रदूषण को दूर करके वातावरण को सौम्य, शान्त एवं आह्लादक बनाता है।

पर्यावरण की शुद्वि के लिए अग्नि में गोघृत, पीपल, गूगल आदि औषधियों की आहुति का विधान वेदमन्त्रों में मिलता है। यदि हम वैदिक साहित्य में वर्णित वन सम्पदा एवं यज्ञ आदि के अनुरुप अपनी दैनिक वैदिक संहिताओं में पर्यावरण की शुद्धि के लिए वन, वृक्ष एवं वनस्पतियों को उपयोगी मानते हुए उनके महत्त्व का निरूपण किया गया है। वेद में वृक्ष, वनस्पतियों तथा यज्ञ को पर्यावरण शुद्धि के लिए सर्वाधिक प्रभावषाली व सर्वोतम साधन के रूप में स्वीकार किया गया है। यदि हम वैदिक साहित्य में वर्णित वन सम्पदा एवं यज्ञ आदि के अनुरुप अपनी दैनिक क्रियाओं का सम्पादन करें तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का भाव विष्व में सर्वत्र व्याप्त होगा।

उपंसहार

आज आधुनिकता के युग में मानव का सामाजिक एवं चारित्रिक ह्रास हो रहा है जो गम्भीर चिन्ता का विषय है। आज के पर्यावरणवेत्ता केवल भौतिक दृष्टि से जल एवं वायु, ध्वनि, भूमि के प्रदूषण को दूर करने के उपाय खोजने तक ही सीमित रह गए है जबकि इनके अतिरिक्त आज विष्व में बढ़ता हुआ वाचिक, मानसिक एवं चारित्रिक प्रदूषण और भी आधिक मानसिक अषान्ति का कारण बना हुआ है जिसके रहते हम एक उन्नत परिवेष की कल्पना नहीं कर सकते। वैदिक मन्त्र–द्रष्टाओं का ध्यान इस भयावह समस्या के इस बिन्दु पर भी गया था और उन्होंने –

"वाचं वदत भद्रया वाचं ते शुन्धामि चरित्रांस्ते शुन्धामि तन्मे मनः षिवसंकल्पमस्तु" इत्यादि वेदमन्त्रों में व्यक्ति के मानसिक, वाचिक एवं चारित्रिक शुद्धि के लिए भी दिव्य प्रेरणा प्रदान की थी। इस प्रकार सार्वभौम मानव संस्कृति के आदि स्त्रोत वेदों में भौतिक एवं आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से पर्यावरण की शुद्धि के ऐसे साधनों का विधान किया गया है जिन्हें अपनाकर संसार में एक सुखी एवं आनन्दमय वातावरण बनाया जा सकता है। हम प्राचीन ऋषियों के मार्ग का अनुसरण करके ही इस स्नेहिल भावना को पुष्ट कर सकते हैं। तभी यह उद्घोषणा सार्थक सिद्ध होगी–

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत्।।

सन्दर्भ–ग्रन्थ–सूची

1. अथर्ववेद संहिता, सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी
2. ऋग्वेद संहिता, सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, पारडी
3. यजुर्वेद संहिता, सातवलेकर, स्वाध्याय मण्डल, औध, पारडी, संवत् 1985
4. श्रीमद्भगवद्गीता, गीता प्रेस, गोरखपुर
5. चरक संहिता
6. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका
7. वैदिक साहित्य और संस्कृति
8. मनुस्मृति